॥ श्रीहरिः ॥

प्रस्तावः ।

प्राचीन काल में जब वेदाङ्गों के सहित वेदों के पढ़ने जानने का विशेष प्रचार था तब विशेष कर ब्राह्मण क्षत्रियादि द्विज लोग विवाह के समय से ही विधिपूर्वक श्रौत स्मार्त्त अग्नियों को स्थापित करके यज्ञशाला में नित्य श्रौत स्मार्त्त अग्निहोत्र किया करते थे और मध्यान्हमें पंचमहायज्ञ भी उसी स्थापित गृह्याग्नि में किया करते थे। उस काल में अग्निहोत्र विधि से भिन्न नित्यहोमविधि की आवश्यकता नहीं थी। परन्तु अब काल के हेर फेर से वह समय नहीं रहा, ब्राह्मणादि द्विजोंका बहुत बड़ा भाग ऐसा है जो यहभी नहीं जानता कि अग्निहोत्र किस को कहते हैं ? विशेष दुःख की बात यह है कि संस्कृत व्याकरण काव्यादि पढ़े हुए पण्डित पदवाच्य हमारे ब्राह्मण भाइयों का भी अधिक भाग ऐसा ही है जिस ने साङ्ग वेद को पढ़ने जानने की प्राचीन परम्परा को तिलाञ्जलि दे देने से श्रेयस्कर अग्निहोत्रादि अपने निज कर्त्तव्य की पालनेच्छा सर्वथा त्याग दी है। अब ब्राह्मणों का बहुत थोड़ा भाग कहीं २ ऐसा रह गया है जो

यथा कथंचित् साङ्गवेद को पढ़ता और कुछ २ अग्निहोत्रादि को भी जानता है परन्तु उन वेद वेदाङ्ग के पढ़ने वालों में भी अग्निहोत्र का मर्म जानने वाले इतने कम हैं जिनका होना न होने के तुल्य ही जानना चाहिये।

जब सूर्य अस्त हो जाते हैं और अन्धकार का समय आ जाता है तब दिन से विरुद्ध अनेक प्रकारके तमोगुणी कामों का प्रारम्भ हो जाता है वैसे ही वेद ज्ञानरूप सूर्य का जबसे अस्त सा होने लगा है तब से देखने में धर्म जैसे प्रतीत होने वाले धर्म से विरुद्ध अनेक काम भारत देश में होने लगे हैं। एक नया मत ऐसा चला है जिसमें पंडित नामधारी अनेकों में एक भी मनुष्य नहीं जानता कि वेद का लक्षण विषय, अधिकारी और ठीक ठीक अकाट्य प्रयोजन क्या २ है तथा अग्निहोत्र क्या है यह भी उस मत में अब तक भी कोई नहीं जानता, तथापि वेद और अग्निहोत्रादि शब्दों का अत्यन्त मिथ्या हल्ला मचा रक्खा है, उस हल्लाका परिणाम यह हुआ है कि साधारण कोटि के सनातनधर्मी भी सहस्रों मिथ्या मतजाल में फंस गये और वेदोक्त अग्निहोत्र का तत्व न जानने वाले अनेक सनातनधर्मी लोग भी समाजियों के नकली अग्निहोत्रको करने लगे। अनेक लोग नित्यहवनविधि पुस्तक मांगने लगे ऐसी दशा देख कर हमारा विचार हुआ कि

वेदादिशास्त्रों की आज्ञानुसार नित्यहोमविधि प्रकाशित करें।

यद्यपि किसी शास्त्रके एक प्रकरणमें ज्यों का त्यों ऐसा ही नित्य होमका विधान नहीं मिलेगा जैसा हम लिखते हैं। तथापि मनमाना विचार समाजियों का सा नहीं लिखेंगे। क्योंकि—

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य-वर्त्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति-न सुखं न पराङ्गतिम् ॥१॥
तस्माच्छास्त्रं प्रमाणन्ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्मकर्त्तुमिहार्हसि ॥ २ ॥

भावार्थ-भ०गीता अ०-१६में लिखा है कि शास्त्रोक्त विधान को छोड़ के जो मनमाना धार्मिक कर्म करता है वह कर्म के शुभ फल सुख और उत्तम गति को प्राप्त नहीं होता। इससे वेदानुयायी मनुष्यको कर्त्तव्य अकर्त्तव्य की व्यवस्थाके लिये शास्त्र का ही प्रमाण मानना चाहिये। शास्त्रोक्त विधान को जानकर तदनुसार कर्म करना चाहिये। इस प्रमाण के अनुसार हम इस पुस्तकमें नित्य २ होने वाले सायं प्रातः होमका विधान शास्त्र प्रमाणों सहित लिखेंगे। आशा है कि यह पुस्तक ब्राह्मणादि द्विजों का अधिक उपकारी होगा।

हम जिस नित्य होम को यहां लिखना चाहते हैं वह

स्मार्त्त वा गृह्य अग्निहोत्र का शास्त्रानुकूल प्रतिनिधि वा अनुकरण माना जायगा। श्रौत स्मार्त्त दोनों प्रकार का साङ्गोपाङ्ग अग्निहोत्र पूरा कहाता है। इस श्रौत अग्निहोत्र को कल्पसूत्रानुसार यज्ञशाला बनती है उस में पांच कुण्ड बनते हैं उन्हींमें पर्वों के समय दर्शेष्टि पौर्णमासेष्टि आदि इष्टियां हुआ करती हैं। इन श्रौत स्मार्त्त अग्नियों का विधिपूर्वक आधान किया जाता है। वे अग्नि बीच में बुतने नहीं पाते मरण पर्यन्त रखने होते हैं। इस मुख्य अग्निहोत्र से भिन्न द्वितीय कोटि का स्मार्त्त वा गृह्य अग्निहोत्र कहाता है जिसमें एकही कुण्ड में अग्नि को विधि पूर्वक स्थापित किया जाता और जन्म भर बुतने नहीं पाता उसी स्थापित किये गृह्याग्नि में नित्य सायं प्रातः काल दो २ आहुति चावल या दधि की दी जाती है उसीमें नित्यका भोजन पकाया जाता और उसी अग्नि में प्रतिदिन पञ्चमहायज्ञों के देवयज्ञ की आहुतियां हुआ करती हैं। अब अग्नि को विधिपूर्वक स्थापन करके सुरक्षित रखते हुये अग्निहोत्रादि कर्म करने वालों का अभाव सा हो गया है। परन्तु सायं प्रातः काल होम करने के अभिलाषी अब भी अनेक महाशय दीखते हैं उनके लिये यह सुगम विधान लिखा जाता है।

नित्य होम करने वालों को एक तांबे का कुण्ड रखना

चाहिये और आचमनी के तुल्य बनाई एक चिमची वा स्रुक् रखना और कांसेकी एक छोटी कटोरी रखना चाहिये जिस में गौ का व उसके अभाव में भैंस का घी रख लिया जाय। ढाँक, विल्व, चन्दन, देवदारु, खदिर प्लक्ष पीपल गूलर वट इनमें पहले २ वृक्षों का समिधा उत्तम कहीं व मानी हैं। परन्तु होम में आम की समिधा निषिद्ध है। मन वाणी शरीर की अपवित्रता रूप पाप दोषों के निवारणार्थ मनुष्य को नित्य प्रायश्चित्त करना चाहिये। मन वाणी शरीर का शुद्ध करलेना ही बड़ा पुण्य धर्म स्वरूप है इसी में सब प्रकार के इष्ट की सिद्धि हो जाती है। मनु० अ० ११ । ४४ । ४५ ॥

अकुर्वन् विहितं कर्म्म निन्दितं च समाचरन्।
प्रसक्तश्चेन्द्रियार्थेषु प्रायश्चित्तीयते नरः॥
चरितव्यमतो नित्य प्रायश्चित्तं विशुद्धये।
निन्द्यैर्हिलक्षणैर्युक्ता जायन्तेऽनिष्कृतैनसः॥

भावार्थ-शास्त्रोक्त सन्ध्योपासनादि कर्मों को ठीक २ न करने से, कठोर भाषण, अपवित्र भक्षण, इन्द्रियों व मन की चंचलता इत्यादि निन्दित निषिद्ध कर्म करनेसे और इन्द्रियों के भोग्य विषयों में आसक्त होने से मनुष्य प्रायश्चित्त करने योग्य हो जाता है। ऐसा मनुष्य लाखों में एक भी मिलना कठिन है जो शास्त्रोक्त कामों को ठीक २ करता नि-

न्दित कर्मों से बचा और पूरा जितेन्द्रिय हो, इससे प्रायः सभी प्रायश्चित्त करने योग्य हैं मनुष्य का शुद्ध होना वा पुण्यात्मा धर्मात्मा होना एक ही बात है। चाहे यों कहो कि शास्त्रोक्त सभी धर्म के काम शोधन रूप प्रायश्चित्तार्थ ही हैं। जैसे प्रातःकाल की संध्योपासना से रात्रिकृत पापों की निवृत्ति होती और सायंकालीन सध्यासे दिनके किये पाप नष्ट होते हैं इससे संध्योपासन भी एक प्रकार सायं प्रातः संशोधनरूप प्रायश्चित्त है। गर्भाधानादि संस्कारों से भी बीज और गर्भ सम्बन्धी दोषों की शुद्धि होती है इसी के अनुसार नित्य होम से भी मनुष्यों की अनेक विध शुद्धि होती है।

महाव्याहृतिभिर्होमः कर्त्तव्यः स्वयमन्वहम्।
अहिंसासत्यमक्रोध-मार्जवंचसमाचरेत्॥
मन्त्रैःशाकलहोमीयै-रब्दंहुत्वाघृतंद्विजः।
सुगुर्वप्यपहन्त्येनो जप्त्वावानमइत्यृचम्॥

मनुजी अ० ११। २२३। २५७ में कहते हैं कि अपने कल्याण के लिये ब्राह्मणादि द्विज हिंसा तथा क्रोध त्याग के साथ २ सत्य और प्रिय भाषण करते हुए नित्य २ महाव्याहृतियों से होम किया करें। शाकल होमके छः मन्त्रों से एक वर्ष तकभी प्रतिदिन घृतद्वारा होम करें तो वा (नमइन्द्रश्च) इस मन्त्र का प्रतिदिन जप करें तो बड़े से बड़ा पाप भी छूट

जाता है। इत्यादि प्रमाणों से पाठक लोग समझ गये होंगे कि महाव्याहृति और शाकल होम के छः मन्त्रों से प्रतिदिन होम करना मन्वादि महर्षियों के प्रमाणानुसार है इस लिये नित्य हवन में ये दश और सर्व प्रायश्चित्त की ये पांच १५ पन्द्रह आहुति प्रधान होम समझा जायगा। सर्व प्रायश्चित्तकी पांच आहुतिभी सर्वत्र सब स्मार्त्त होममें व्याप्त हैं यद्यपि हम ने १५ पन्द्रह आहुति प्रधान होमकी बतायीं तथापि विशेषकर नित्यहवन में शाकल होमकी छः आज्याहुति ही सर्वोपरि प्रधान होमकी माननी चाहिये। भीष्मस्तवराजमें लिखा है कि

चतुर्भिश्चचतुर्भिश्च द्वाभ्यांपञ्चभिरेवच।
हूयतेचपुनर्द्वाभ्यां तस्मैहोमात्मनेनमः॥

भा०—पहिले आधार और आज्यभाग का चार तदनन्तर व्यस्त समस्त महाव्याहृतियों की चार, प्राजापत्य और स्विष्टकृत दो, सर्व प्रायश्चित्त की पांच, अन्त में बहिर्होम और पूर्णाहुति की दो ४।४।२।५।२ ये सत्रह आहुति जिस प्रजापति आदि नाम रूप भगवान् के लिये प्रत्येक होममें दी जाती हैं उस होमात्मक परमेश्वरको मेरा नमस्कार प्राप्त हो। इस प्रमाण के अनुसार सत्रह आहुति सब स्मार्त्त होमों में व्यापक हैं। प्रधान होम की आहुति चार महाव्याहृतियों के पश्चात् सर्वत्र बढ़ा ली जाती हैं सो हम भी इस नित्य के

आज्यहोम में शाकल होम की छः आहुति बढ़ादेंगे। महर्षि पारस्कराचार्यने लिखा है कि(एष एव विधिर्यत्र क्वचिद्धोमः) यह पञ्चभूसंस्कारादि कुशकण्डिका का कृत्य सब होमों में ऐसा ही करना चाहिये इसके अनुसार प्रतिदिन कुश कंडिका का सब कृत्य प्राप्त हुआ। तब उसका अपवाद कहते हैं कि-

उपयमनप्रभृत्यौपासनस्य परिचरणम् ॥

पा० गृ० सू० १। ६ में लिखा है कि नित्यप्रति के सायंप्रातः होने वाले होम में सब कुश कंडिका न करे किन्तु उपयमन कुश लेने से लेकर। यथा—

उपयमनकुशानादाय समिधोऽभ्याधाय पर्युक्ष्य जुहुयात् ॥ पा० गृ० सू०। १।१।

भा०-तीन पांच वा सात शुद्ध सूतसे लपेटे हुए उपयमन कुशोंको वामहाथमें लेकर खड़े हो प्रजापतिका स्मरण करते हुए तीन समिधा अमन्त्रक अग्निमें चढ़ाके प्रोक्षणीस्थ जलसे ईशानकोण से आरम्भ कर उदगपवर्ग जलसेचन करके होम करै, होमके समय उपयमन कुश वाम हाथ में रक्खे जांय, प्रत्येक आहुति के समय स्रुवा वा चमची के नीचे उपयमन कुश लगा दिये जावें। स्वाहा पर आहुति न छोड़े किन्तु (इदं प्रजापतये न मम) इत्यादि त्याग वाक्य के अन्त के साथ,२ आहुति देनी चाहिये।

अथ नित्यहोमविधिः ।

आचमन और प्राणायाम करके सँकल्प करे कि—

अद्य शुभपुण्यतिथौ सपरिवारस्य ममात्मन सर्वदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थमौपासन प्रतिनिधित्वेन प्रात्यहिकं होमं करिष्ये—

वाम हाथ में उपयमन कुश लेकर कहीं शुद्ध स्थान से चमटादि द्वारा अग्नि लाकर पूर्वाभिमुख हो अग्निके कुंडमें स्थापित करे। वा समिधा धरके देवदारु को दीवासलाई से जलाकर जलते हुए अग्निको कुंडमें स्थापित करदेवे। पश्चात खड़े होकर प्रादेशमात्र तीन समिधा घी में डुबोकर एक २ कर अग्निमें चढ़ावे तदनन्तर बैठकर दहिने हाथसे ईशानकोण से उत्तर पर्यन्त अग्निका प्रदक्षिण क्रमसे पर्युक्षण नाम सब ओर जल सेचन करके कुंड से दक्षिण में पूर्वाग्र, पश्चिम में उत्तराग्र, उत्तर में पूर्वाग्र कुश बिछाकर निम्नलिखित मंत्रोंसे सायं प्रातः होम करे। प्रत्येक आहुति देते समय वाम हाथ में लिये उपयमन कुश स्रुवा वा चमचो की डंडी से टेक लिया करे और प्रत्येक आहुति के अन्तमें दो एक विन्दु घृत प्रोक्षणीपात्र में छोड़ता जावे।

ओ३म्-प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये नमम ॥ १ ॥ (इत्युपांशु--मनसा) ओ३म्--इन्द्राय स्वाहा--इदमिन्द्राय न मम ॥ २ ॥ (इत्याघारौ) ओमग्नये स्वाहा-इदमग्नये न मम ॥ ३ ॥ ओं सोमाय स्वाहा-इदं सोमाय न मम ॥ ४ ॥ (इत्याज्यभागौ) ओं भूः स्वाहा इदमग्नये नमम ॥५॥ ओं भूर्भुवः स्वाहा--इदं वायवे न मम ॥ ६ ॥ ओं स्वः स्वाहा-इदं सूर्याय न मम ॥ ७ ॥ ओं भूर्भुवः स्वः स्वाहा इदमग्निवायुसूर्येभ्यो न मम ॥८॥ [इति महाव्याहृतयः] ओं देवकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा । इदमग्नये नमम ॥ ९ ॥ ओं मनुष्यकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा । इदमग्नये नमम ॥१०॥ ओं पितृकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा । इदमग्नये नमम ॥११॥ ओमात्मकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा । इदमग्नये नमम

॥१२॥ ओम्--एनसएनसोऽवयजनमसि स्वाहा इदमग्नये नमम ॥ १३ ॥ ओंयच्चाहमेनो विद्वांश्चकार यच्चाविद्वांस्तस्य सर्वस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा । [य० अ० ८ । कण्डिका १३] इदमग्नये न मम ॥१४॥ ओं त्वन्नोअग्नेवरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठोवन्हितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषाꣳसिप्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा । [य० अ० २१ । ३] इदमग्नीवरुणाभ्यां नमम ॥ १५ ॥ ओं सत्वन्नोअग्नेऽवमोभवोती नेदिष्ठोऽअस्याउषसोव्युष्टौ । अवयक्ष्व नो वरुणꣳरराणो वीहिमृडीकꣳसुहवोनएधि स्वाहा । (य० अ० २१ । ४) इदमग्नीवरुणाभ्यां नमम ॥ १६ ॥ ओम्--अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमयाऽअसि । अयानो यज्ञंवहास्ययानोधेहिभेषजꣳस्वाहा । इदमग्नये नमम ॥१७॥ ओं--ये ते शतं वरुणयेसहस्रं

यज्ञिया: पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतःस्वर्काःस्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च नमम ॥ १८ ॥ ओम्-उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमꣳश्रथाय अथावयमादित्य व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा ॥ (य० अ० १२ । १२) इदं वरुणाय नमम ॥ १९ ॥ ओम्-प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये नमम ॥२०॥ ओम्--अग्नयेस्विष्टकृते स्वाहा । इदमग्नये स्विष्टकृते नमम ॥ २१ ॥

तदनन्तर अग्निकुण्ड के सब ओर रक्खे हुए कुशों को इकट्ठे कर घी लगाके (ओं देवागातुविद०) मन्त्र से होम कर देवे ॥

ओम्--देवागातुविदो गातुं वित्त्वागातुमित । मनसस्पतइमं देवयज्ञꣳस्वाहावातेधाः स्वाहा । अ० २ । १२ । इदं वाताय नमम ॥

तदनन्तर बचे हुए सब घी को चमची वा स्रुवा में पूरा पूरा भर के खड़े होकर (पूर्णादर्वि०) मन्त्र से त्याग वाक्य की समाप्ति के साथ, आहुति देवे ॥

ओं पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेवविक्रीणावहाइषमूर्जꣳ शतक्रतो स्वाहा [य० ३ । ४८] इदमिन्द्राय न मम ।

इसके पश्चात् प्रोक्षणीपात्र में छोड़े हुए घृत के विन्दुओं को अनामिका अङ्गुलिसे एकत्र करके चाट लेवे । यदि किसी महाशय का विचार हो कि मैं प्रतिदिन वा कभी २ अधिक होम करूं तो उसको चाहिये कि ताया छाना शुद्ध घी देशी बुरा और शुद्ध किये तिल इन तीनों को मिला के कुशों के होम से पहिले (ओम तत्सवितु०) गायत्री मन्त्र से जितना चाहे होम करे । त्याग-इदं सवित्रे नमम । ऐसा बोलना चाहिये । ऊपर कही २३ आहुतियों से भिन्न विष्णु भक्त अधिक होम करना चाहें तो पुरुषसूक्तसे करें तथा शिवभक्त शतरुद्री से करें । अल्पमृत्यु से वचके आयुवृद्धि की कामना वाले लोग विल्वपत्र और तिलों को घृत मिष्ट युक्त करके महामृत्युञ्जय मन्त्र से नित्य होम करें, ऐसा पाराशर स्मृति में लिखा है । इस प्रकार जो कोई ब्राह्मणादि द्विज वर्षों तक

सायं प्रातःकाल नियम से और श्रद्धाभक्ति से होम करते रहैं तो उनके सब प्रकार के पाप दोषोंकी निवृत्ति होकर बड़े पुण्यात्मा धर्मात्मा तेजस्वी हो सकते हैं ऐसे लोगोंको संसार की विपत्ति कभी नहीं दबाती यही बात मनुजीने लिखीहै कि-

जपतां जुह्वतां चैव विनिपातो न विद्यते ।

नित्य नियम से जप होम करने वालोंकी अधोगति इस लोक परलोक में कहीं नहीं होती इससे अपना कल्याण चाहने वाले द्विजों को इस छोटे पुस्तक में लिखे अनुसार नित्य होम अवश्य करना चाहिये। रोगादि के भय से बचने के लिये कुशों के होम से पहिले जितना चाहे महामृत्युञ्जय मन्त्रों से भी नित्य होम करे तो उस घरमें प्लेग कभी न होगा। लक्ष्मी को चाहने वाला प्रतिदिन लक्ष्मीसूक्त की पन्द्रह ऋचाओंसे घृतकी पन्द्रह आहुति करे यह भी शास्त्रानुकूल होम है। अनेक प्रकार कामनाओं के काम्य होम मन्त्र अनेक हैं उन का विचार इससे नहीं लिखा कि फल कामना रहित होकर किये कर्म से स्वयमेव सब कामनायें सिद्ध हो जाती हैं।

इति नित्यहोमविधिः